Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sociology
Research Link - 138, Vol - XIV (7), September - 2015, Page No. 67-69
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

संचार और औद्योगिक संबंध : समाजशास्त्रीय अध्ययन (भिलाई इस्पात संयंत्र के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र में भिलाई इस्पात संयंत्र के विशेष संदर्भ में संचार और औद्योगिक संबंधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। उद्योगों के विकास क्रम में संचार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संचार माध्यमों के विकास ने औद्योगिक प्रगति को और भी तीव्रता प्रदान की है। स्वस्थ औद्योगिक संबंधों के निर्माण, निर्वहन और औद्योगिक कुशलता के विकास में संचार की भूमिका सबसे महती है। इसके अभाव में औद्योगिक क्षेत्र में न तो सही नियोजन हो पाता है और न समय पर निर्णय लिया जा सकता है। सम्प्रेषण एक-दूसरे के मध्य सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया तो है ही, जिसमें आदेश, निर्देश, सुझाव, शिकायत व आपसी विचार-विमर्श समाहित है, साथ ही इसमें प्रतिक्रिया जानने की क्षमता भी निहित है।

उपेन्द्र कुमार शर्मा* एवं डॉ.(श्रीमती) सुचित्रा शर्मा**

प्रस्तावना :

संचार से तात्पर्य विचारों एवं सूचनाओं को अन्य व्यक्ति तक पहुँचाना होता है। संचार के लिए तीन तत्वों का होना आवश्यक है– सूचनादाता, सूचना प्राप्तकर्ता और सूचना।

आज का औद्योगिक समाज सूचना संग्रहण, संप्रेषण एवं वितरण के बिना अधूरा है। उद्योग भी समाज की महत्वपूर्ण इकाई हैं और मनुष्य एक ऐसे जीवन संगठन की इच्छा करता है, जिसमें वह अन्य व्यक्तियों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित कर सके। उद्योग के सुचारू संचालन के लिए स्वस्थ संबंधों का होना अनिवार्य है। उद्योग में न केवल श्रमिकों का आपस में संबंध होता है, बल्कि प्रबंधन एवं प्रबंधन और श्रमिकों एवं प्रबंधन के साथ–ही अन्य उद्योगों, बाजार (जिसमें क्रेता एवं विक्रेता दोनों शामिल होते हैं) सरकार एवं आसपास के लोगों से संबंध भी होता है।

मानव तत्व ही है, जो अन्य तीन तत्वों के सही नियोजन एवं प्रबंधन द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त कर किसी उद्योग को सफलता की नई ऊँचाई तक पहुँचा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि उद्योग में औद्योगिक संबंध उच्च श्रेणी के हों। किसी भी उद्योग में स्वस्थ औद्योगिक संबंधों के लिए जरूरी है कि वहाँ प्रबंधन एवं कर्मचारियों में, प्रबंधन एवं श्रम संघों में, कर्मचारियों एवं श्रम संघों में और कर्मचारियों में आपस में बेहतर तालमेल तो हो ही साथ–ही वहाँ के कर्मचारी स्वयं को सुरक्षित एवं संतुष्ट महसूस करें। नियोजकों और कामगारों के विवाद और टकराव को रोकने में औद्योगिक संबंध विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह सब बेहतर संवाद के माध्यम से ही संभव हो पाता है। बेहतर संवाद की स्थापना में संचार के साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जॉन डनलप ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "औद्योगिक समाज निश्चित रूप से औद्योगिक संबंधों को जन्म देते हैं, जिन्हें श्रमिकों, प्रबंधकों तथा सरकार के अंतर्संबंध कहा जा सकता है।"

संचार साधनों की सहायता से प्रबंधन अपनी नीतियों, समस्याओं, चुनौतियों आदि को सही समय एवं सही तरीके से कर्मचारियों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है, जिससे कर्मचारियों को मानसिक रूप से तैयार होने का समय तो मिलता ही है, साथ–ही कर्मचारी स्वयं को संगठन से जुड़ा हुआ भी महसूस करता है। वर्तमान संचार क्रांति के युग में संचार के साधनों का तीव्र गति से विकास हुआ है। टेलीफोन, मोबाईल फोन, इंटरनेट, इंट्रानेट, फैक्स, आदि की सहायता से उद्योगों में सूचनाओं का आदान–प्रदान बहुत ही तीव्र गति से संभव हुआ है। इन साधनों के माध्यम से सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना तुरन्त ही संभव तो होता ही है साथ–ही वापस फीडबैक भी प्राप्त करना संभव होता है। लेकिन कभी–कभी अति सूचनाओं के कारण भ्रम की स्थिति भी निर्मित हो जाती है। भ्रम की स्थिति से बचाव के लिए उन्नत संचार साधनों के साथ–साथ कुशल मानव संसाधन का होना भी आवश्यक होता है।

नियोजकों एवं कामगारों के बीच सामंजस्य और सद्भाव के अभाव के कारण टकराव की स्थिति बनी रहती है। श्रमिकों में असंतोष और आक्रोश परिव्याप्त रहता है। फलतः औद्योगिक विवाद की स्थिति उत्पन्न होती है। गुड़गाँव स्थित मारूती कम्पनी के महाप्रबंधक को जिन्दा जलाने की घटना हो या छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में स्थित जे.के.लक्ष्मी सीमेंट कम्पनी में हुई आगजनी की घटना, यदि समय पर संचार साधनों का बेहतर प्रयोग करते हुए कामगारों और क्षेत्र के लोगों से संवाद स्थापित किया जाता तो शायद इन घटनाओं को टाला जा सकता था।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या संचार के साधन औद्योगिक संबंधों को प्रभावित करते हैं और यदि

**शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग), शासकीय वि.या.ता.स्नात.स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)*
***सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग), शासकीय वि.या.ता.स्नात.स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)*

करते हैं, तो किस रूप में ? क्या संचार साधनों के कुशल प्रयोग से औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाये रखने में मदद मिलती है ? शिकायत दर्ज करवाने के संबंध में कर्मचारियों का क्या मत है तथा क्या नीतिगत मामलों में कर्मचारियों की सलाह ली जाती है ?

तथ्य संकलन एवं विश्लेषण :

यह अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है। भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्य करने वाले 50 कर्मचारियों का स्तरीकृत निदर्शन (Stratified Sampling) के माध्यम से चयन किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के भिलाई शहर में स्थित भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL) की एक महत्वपूर्ण इकाई भिलाई इस्पात संयंत्र में वर्तमान में कुल लगभग 29000 अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यरत हैं।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु भिलाई इस्पात सयंत्र के कर्मिको से संबंधित आँकड़े निम्नलिखित हैं :

अध्ययन के लिए चुने गये 50 कर्मियों में से 45 (90%) विवाहित, 3 (6%) अविवाहित एवं 2 (4%) विधवा हैं। 3 (6%) मैट्रिक, 8 (16%) हायर सैकेण्ड्री, 15 (30%) स्नातक और 34 (68%) कार्मिक स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित हैं। 8 (16%) उत्तरदाता अधिकारी वर्ग का और 42 (84%) उत्तरदाता गैर– अधिकारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संचार के साधनों का औद्योगिक संबंधों पर प्रभाव :

वर्तमान के विकसित संचार के साधनों ने व्यक्ति के जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। विकसित संचार ने पूरी दुनिया को एक गाँव में बदल दिया है। इन संचार के साधनों से औद्योगिक संबंध भी अप्रभावित नहीं रहे हैं। उत्तरदाताओं के अनुसार विकसित संचार के साधनों का औद्योगिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित आँकड़े निम्नलिखित ग्राफ में दर्शाये गए हैं :

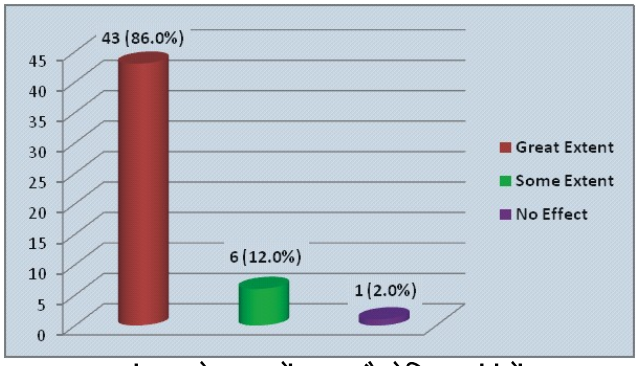

ग्राफ 1 : संचार के साधनों का औद्योगिक संबंधों पर प्रभाव

स्पष्ट है कि अधिकतर (86.0%) उत्तरदाताओं के अनुसार विकसित संचार साधनों के कारण औद्योगिक संबंध बहुत हद तक और 12.0% उत्तरदाताओं के अनुसार कुछ हद तक औद्योगिक संबंध प्रभावित हुए हैं। 02.0% उत्तरदाताओं के अनुसार संचार के साधनों ने औद्योगिक संबंधों को बिलकुल भी प्रभावित नहीं किया है। प्रभाव को स्वीकार करने वालों में लगभग सभी मानते है कि संचार के विकास से औद्योगिक संबंध मजबूत हुए हैं।

Gabriela Hener (2010)[1] ने अपने लेख में संगठन में उत्पन्न विवादों को सुलझाने, नियंत्रित करने तथा बचाव में संचार के बहुमुखी रोल को प्रस्तुत किया है। साथ–ही यह एक संस्थान में संचार व विवादों पर एक सैद्धांतिक मॉडल का सेट प्रस्तुत कर यह बताने का प्रयास किया है कि संचार किस प्रकार औद्योगिक शांति बनाये रखने में कारगर सिद्ध हो सकता है।

संचार साधनों के कुशल प्रयोग से औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाए रखने में मदद :

संबंधों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि संवाद बना रहे और संचार के साधन संवाद बनाए रखने के महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ औद्योगिक संबंधों को बनाए रखने में संचार के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उत्तरदाताओं के इस संबंध में मतों को नीचे ग्राफ में दर्शाया गया है :

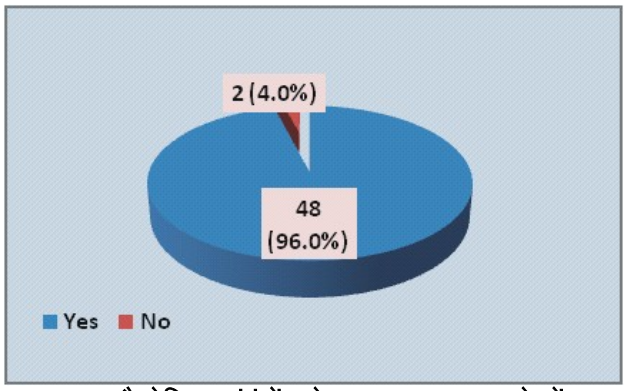

ग्राफ 2 : औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाए रखने में मदद

ग्राफ 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अधिकतर 48 (96.0%) उत्तरदाताओं के अनुसार संचार साधनों के कुशल प्रयोग से औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाए रखने में मदद मिलती है और केवल 02 (4. 0%) उत्तरदाता ही इस बात से इन्कार करते हैं। स्पष्ट है कि संचार के साधनों और उनके कुशल प्रयोग से औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाये रखने में मदद मिलती है और इनकी सहायता से औद्योगिक विवाद की स्थिति को टालने के साथ–साथ औद्योगिक शांति स्थापित करने में भी मदद मिलती है।

शिकायत दर्ज करवाने के संबंध में मत :

संगठन में कार्यरत व्यक्ति वहाँ की व्यवस्था, कार्यदशा, सुविधा, वेतन आदि किसी भी असंतुष्टता की स्थिति को लेकर शिकायत दर्ज करवाता है। किसी संगठन में प्राप्त होने वाली शिकायतों की संख्या उस संगठन की व्यवस्था और कर्मचारियों की संतुष्टता को दर्शाता है। भिलाई इस्पात संयंत्र में प्राप्त शिकायतों से संबंधित आँकड़े इस प्रकार हैं :

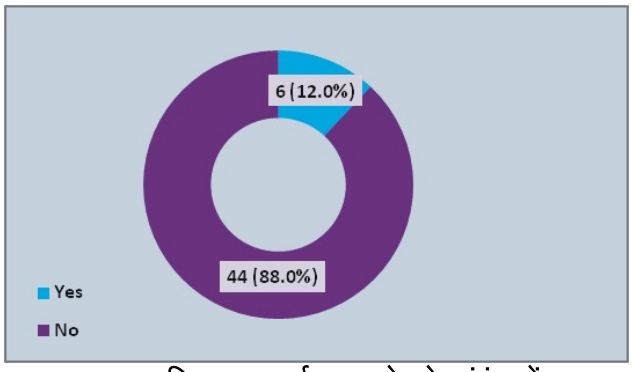

ग्राफ 3 : शिकायत दर्ज करवाने के संबंध में मत

ग्राफ 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि केवल 06 (12.0%) उत्तरदाता ही ऐसे हैं जिन्होनें कभी–न–कभी शिकायत दर्ज करवायी है, जबकि 44 (88.0%) उत्तरदाता ऐसे हैं, जिन्होंने कभी भी शिकायत दर्ज नहीं करवायी है। यह भिलाई इस्पात संयंत्र की कार्यदशा, सुविधा, वेतन आदि की बेहतर स्थिति को दर्शाता है।

Casey Ichniowski (1984)[2] ने भी अपने अध्ययन "Industrial Relation and Economic Performance: Grievances and Productivity में पाया कि ग्रिवान्स दर एवं उत्पादकता एक–दूसरे के व्युतक्रमानुपाती (inverse preportion) हैं। अध्ययन के आधार पर, एक ग्रिवान्स मुक्त उद्योग की उत्पादकता, औसत ग्रिवान्स दर वाले उद्योग की तुलना में 1.3% अधिक होती है और लाभदायकता 16.7% अधिक होती है। अतः उद्योग के कार्य निष्पादन को वहाँ के औद्योगिक संबंध गम्भीर रूप से प्रभावित करते हैं।

नीतिगत मामलों में कर्मचारियों की सलाह :

वर्तमान परिदृश्य में उद्योग की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि प्रबंधन में कर्मचारियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हो। यह भागीदारी नीतिगत मामलों में कर्मचारियों की सलाह के रूप में भी हो सकती है। इस संबंध में उत्तरदाताओं के विचारों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है :

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट है कि केवल 16.0% उत्तरदाता

तालिका 1 : नीतिगत मामलों में कर्मचारियों की सलाह

Response	Executive	Non-Executive	Total Freq.	Total %
	Frequency (%)	Frequency (%)		
Yes	04 (50.0)	04 (09.52)	08	16.0
No	04 (50.0)	38 (90.48)	42	84.0
Total	**08 (100.0)**	**42 (100.0)**	**50**	**100.0**

ही स्वीकार करते हैं कि नीतिगत मामलों में उनकी किसी–न–किसी रूप में सलाह ली जाती है और ऐसा मानने वालों में 50.0% अधिकारी और 09.52% कर्मचारी वर्ग के प्रतिनिधि हैं। इन लोगों का मानना है कि सुझाव या समय–समय पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं के माध्यम से कर्मचारियों की तरफ से आने वाले विचारों को नीति निर्धारण के समय ध्यान में रखा जाता है और उन पर उचित ध्यान दिया जाता है। जबकि 84.0% उत्तरदाताओं का कहना है कि नीतिगत मामलों में उनकी सलाह न तो ली जाती है और न ही मानी जाती है और ऐसा मानने वालों में 50.0% अधिकारी और 90.48% कर्मचारी वर्ग के प्रतिनिधि हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भिलाई इस्पात संयंत्र में संचार के साधनों ने औद्योगिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और ज्यादातर कर्मचारियों का मानना है कि संचार साधनों के कुशल प्रयोग से औद्योगिक संबंधों को स्वस्थ बनाये रखने में मदद मिलती है। अध्ययन क्षेत्र की कार्यदशाओं और सुविधाओं के बेहतर स्तर के कारण कर्मचारियों द्वारा शिकायत दर्ज करवाने का स्तर न्यूनतम है। नीतिगत मामलों में कर्मचारियों की सलाह के स्तर को बढ़ा कर प्रबंधन में इनकी भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है, इससे कर्मियों में संगठन के प्रति ज्यादा जवाबदेही की भावना का विकास होगा और उत्पादकता में वृद्धि होगी।

संदर्भ :

(1) *Gabriela Hener (2010) : "Communication and Conflict Management in Local Public Organizations", Transylvanian Review of Administrative Sciences.*

(2) *Ichniowski, Casey (1984) : "Industrial Relations and Economic Performance : Grievances and Productivity", Working Paper, Massachusetts Institute of Technology 50 Memorial Drive Cambridge, Massachusetts.*

(3) *Braga C. F., Nascimento A.G., Do Pereira & Luciano Alves (2011) : "The Word of Mouth Communication and Management Services", African journal of Marketing Mgmt.Vol.3, No. 4.*

(4) *Alan D. Smith & Willam T. Rupp (2002) : "Communication and loyalty among knowledge workers: a resource of the firm theory view", Journal of Knowledge Management,Vol.6, No. 3.*

(5) *Johansson Catrin (2007) : "Research on Organizational Communication", Nordicom Review 28.*

(6) *झा विश्वनाथ (2012) : ''औद्योगिक समाजशास्त्र'', रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।*

❁❁

Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sociology
Research Link - 138, Vol - XIV (7), September - 2015, Page No. 70-71
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

तपेदिक रोग से प्रभावित रोगियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र, दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में तपेदिक रोग से प्रभावित रोगियों के समाजशास्त्रीय अध्ययन से सम्बंधित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आज एच.आई.वी/एड्स के संबंध में टीबी के रोगी ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। इस विषय में खास चेंगराय का थाईलैण्ड में किया गया गुणात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि लोगों में एड्स की जानकारी ज्यादा होती है, पर वे टीबी के बारे में कम जानते हैं। परिणामतः बीमारी से प्रभावित होने के लंबे समय बाद इलाज प्रारंभ होने से अनेक स्वास्थ्यगत समस्याएँ आती हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम समाज के लोगों को इस दिशा में जागरुक करें और उन्हें इसके लक्षणों से अवगत कराएँ तथा यह भी कहें कि लक्षण पाये जाने पर शीघ्र इलाज करवाएँ।

डॉ.ए.एन.शर्मा*, डॉ.एल.एस.गजपाल एवं उमेश कुमार वैद्य*****

प्रस्तावना :

टी.बी. प्रतिवर्ष 10 लाख महिलाओं को मारता है और टी.बी. से लगभग 1 करोड़ महिलाएँ और लड़कियाँ प्रभावित हैं। शोध के क्षेत्र में लैंगिक आधारों पर यह बीमारी उपेक्षित रहा है, बहुत कम शोध इस दिशा में किए गए हैं, जो बीमारी को रोकने की दिशा में है। अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अपने उद्देश्य को निर्धारित करते हुए कुछ शोध रखे गए, जिसमें एम.टी.बी. से टी.बी. के विकास को ध्यान में रखा गया है। व्हाईटमेन का अध्ययन यह दर्शाता है कि पुरूषों की तुलना में महिलाओं की टी.बी. का इलाज 2–3 सप्ताह बाद ही प्रारंभ होता है। खांसी से प्रभावित मरीजों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं को ज्यादा बाद में पूछा जाता है। नकारात्मक सामाजिक प्रभाव महिलाओं के संदर्भ में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है, जो कि इस बीमारी का मुख्य कारण है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन :

बेनर्जी (1986) ने भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के समाजशास्त्रीय उपागम का विश्लेषण करते हुये स्वास्थ्य व्यवहार की विवेचना की है। ट्यूबरक्लोसिस पर नियंत्रण और स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका पर किया गया यह अध्ययन स्वास्थ्य और बीमारी के संदर्भ में महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय अध्ययन है।

पाओलिसो तथा लीस्ले (1995) का अध्ययन यह दर्शाता है कि अनेक गरीब देशों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति निम्न होती है। साथ ही निम्न आर्थिक स्थिति के कारण वे पुरूषों की तुलना में शिक्षा और जानकारी प्राप्त करने में असफल हो जाती हैं, इस प्रकार के लैंगिक भेदभाव के कारण भी महिलाएँ पुरूषों की तुलना में ज्यादा टी.बी. की शिकार होती हैं।

ह्यूडेल्स (1996) का अध्ययन यह दर्शाता है कि रोगी के इलाज में होने वाली देरी विशेषकर महिलाओं के इससे माँ की बीमारी बच्चे में फैलने की संभावना बढ़ जाती है, साथ ही अन्य पारिवारिक सदस्य भी इसके प्रभाव में आ सकते हैं।

बैंक एट.एल. (1996) का अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षण पर आधारित रहा है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण महिलाओं के समक्ष वित्तीय चुनौतियों पुरूषों की तुलना में ज्यादा होता है, जिसके कारण वे अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाती हैं, जबकि वे एक ही छत के नीचे रहते हैं, फिर भी वे उपेक्षित होती हैं।

इसी प्रकार नायर (1997) का अध्ययन भारत में टी.बी. के महिला रोगियों पर केन्द्रित था, जिसमें यह देखा गया कि विवाहित महिलाओं को बीमारी के बाद पति के द्वारा परेशान किया जाता है और इस कार्य मे सास ससुर भी मदद करते हैं।

जानसन एट.एल. (199) का अध्ययन बताता है कि परिवार में महिलाओं की कमजोर परिस्थिति उनमें निम्न आत्म विश्वास और भय उत्पन्न करता है। इसकी तुलना में समक्ष पति परिवार के सदस्यों की राय की परवाह किए बिना ही स्वमेव बीमारी की जाँच करा लेता है और सदस्यों के विरोधी स्वर तथा तलाक जैसी बातों को नकार देता है।

भय रूपी बाधा पुरूषों की तुलना में महिलाओं में ज्यादा होता है और वे अपने रिश्तेदारों तथा पारिवारिक सदस्यों से भी दूर रहना पसंद करते हैं, परिवार के लोग भी रोगी के साथ चाय–पान करना भी पसंद नहीं करते।

लोनार्थ एट.एल. (1999) का अध्ययन मलेशिया के 97 टी.बी. से

**शोध निर्देशक व सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग), शा.इंदिरा गाँधी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, भिलाई (छत्तीसगढ़)*
***सह-निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र अध्ययनशाला), पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*
****शोधार्थी (समाजशास्त्र अध्ययनशाला), पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*

उपचारित मरीजों पर आधारित था, जिसमें यह पाया गया कि अधिकांश मरीजों ने निजी स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज कराया था, जिसकी विश्वसनीयता संदेहास्पद थी, क्योंकि इनके एक्स–रे और बलगम जांच के रिपोर्ट स्पष्ट रूप से बीमारी को दर्शाने वाले नहीं थे।

जानसन (2000) का अध्ययन टी.बी. के मरीजों पर लैगिंक भाव, प्रस्थिति तथा पारिवारिक सदस्यों के सहयोग के पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित रहा है। अध्ययन यह दर्शाता है कि रोग के उपचार के साथ–साथ देखभाल में इलाज में लगे कर्मचारी, डॉक्टर तथा पारिवारिक सदस्यों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है।

वैश्विक परिदृश्य में एचआईव्ही/एड्स बीमारी के संबंध में टी. बी. के रोगी ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। इस विषय में खास चेंगराय का थाईलैंड में किया गया गुणात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि लोगों में एड्स की जानकारी ज्यादा होती है, पर वे टी.बी. के बारे में कम जानते हैं। परिणामतः बीमारी से प्रभावित होने के लम्बे समय बाद इलाज प्रारंभ होने से अनेक स्वास्थ्यगत समस्याएँ आती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :

(1) अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं की सामान्य एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना। (2) उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना। (3) उत्तरदाताओं के टी.बी. से संक्रमित होने के कारण एवं लक्षण को ज्ञात करना।

उपकल्पना :

(1) पुरूषों की तुलना में महिलाएँ टी.बी. रोग से ज्यादा प्रभावित हो सकती हैं। (2) परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति पुरूषों की तुलना में महिलाओं के रोगग्रस्त होने का कारण हो सकता है।

उत्तरदाताओं का चुनाव :

उत्तरदाताओं के चुनाव हेतु दुर्ग जिला चिकित्सालय में अप्रैल, मई तथा जून 2013 में कुल किए गए टी.बी. परीक्षण 2423 में से पाजीटिव पाए गए। 408 रोगियों के 50 प्रतिशत का चुनाव उत्तरदाता के रूप में किया गया है। इस प्रकार अध्ययन हेतु कुल 204 उत्तरदाताओं का चुनाव अध्ययन हेतु दैव–निर्देशन की लाटरी प्रणाली से किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधि एवं उपकरण :

प्रस्तावित शोध अध्ययन हेतु अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है।

निष्कर्ष :

उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि अध्ययनगत समूहों के सदस्यों में सर्वाधिक सदस्य 52 प्रतिशत उत्तरदाता 30–40 वर्ष की आयु के मध्य के हैं। वहीं 23 प्रतिशत उत्तरदाता 20–30 वर्ष की आयु का प्रतिनिधित्व करते हैं व 18 प्रतिशत उत्तरदाता 40–50 वर्ष के हैं। 50–60 वर्ष के उत्तदाताओं का प्रतिशत 5.5 है। 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के सदस्यों का प्रतिशत 1.5 है। उत्तरदाताओं के धर्म संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ कि 85 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म के मानने वाले हैं। मातृभाषा संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि सर्वाधिक 73.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है, 26.5 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं की मातृभाषा हिन्दी है। शहर में हिन्दी भाषा बोलने वालों की अधिकता रही, वहीं शहरी सीमा से लगे क्षेत्रों में स्थानीय बोली का प्रभाव ज्यादा पाया गया है। अधिकांश उत्तरदाता पुरूष है। 65 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाता तपेदिक रोग से ग्रसित हैं तथा 35 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाएँ हैं, जो तपेदिक रोग से ग्रसित हैं। शिक्षा का स्तर कम होने के कारण जागरूकता में कमी है और यह मजदूर वर्ग के लोग हैं तथा इनमें 69 प्रतिशत शिक्षित हैं तथा 31 प्रतिशत अशिक्षित हैं। अधिकांशतः निम्न वर्ग के लोग इस बीमारी से ग्रसित हैं। इनके अधिकांश 55 प्रतिशत यादव जाति के लोग टी.बी. से ग्रसित हैं। इनमें 30–40 आयु वर्ग के लोग अधिक ग्रसित हैं। इनमें शहरी लोग सबसे ज्यादा टी.बी. से पीड़ित हैं।

सदस्यों का दृष्टिकोण :

हमने अपने अध्ययन मे यह पाया कि पारिवारिक सदस्यों का संबंध अच्छा है। बीमार होने पर अधिकांश व्यक्ति अपने बीमारी के संबंध में दूसरों को जानकारी होने पर भय महसूस करता है तथा घर के सदस्य भी दूरी बनाकर रखते हैं। मरीजों का मानना है कि आसपास के व्यक्तियों को स्वयं के बीमारी के संबंध में जानकारी प्राप्त न हो सके, ऐसा वे प्रयास करते हैं।

चिकित्सक एवं रोगी के मध्य संबंध :

तपेदिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों का इलाज डॉक्टर के माध्यम से होता है तथा टी.बी. चिकित्सालय के कर्मचारी एवं डॉक्टर का व्यवहार बहुत अच्छा है। टी.बी. चिकित्सालय में मरीजों को नियत स्थान पर बैठने की सलाह दी जाती है। टेस्ट रिपोर्ट आने पर उन्हे विस्तार से उनकी बीमारी के संबंध में बताया जाता है। दवाई व जांच के संबंध में एवं चिकित्सक एवं कर्मी का व्यवहार बहुत अच्छा रहता है। परिवार के संबंध में भी जानकारी प्राप्त करते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम समाज के लोगों को इस दिशा में जागरूक करें और उन्हें इसके लक्षणों से अवगत कराएँ तथा यह भी कहें कि लक्षण पाए जाने पर शीघ्र इलाज कराएँ।

संदर्भ :

(1) *Cassels A, Heineman E, LeClerq S.; Tuerculosis case-finding in Eastern Nepal. Tebrcle 1982 : 63 : 173-185.* ***(2)*** *Johansson E; emerging perspectives on tuberculosis and gender in Vietnam Thesis, Umea University Sweden, 2000. 461-465.* ***(3)*** *Liefooghe R, Michiels N, Habib S, Moran MB, de Muynck A;. perception and social consequences of tuberculosis : a focus group study of tuberculosis patients in Sialkot, Pakistan, Soc Sci Med 1995 ; 41 (12) 1685-1692.* ***(4)*** *Lonnroth K, Thuong LM, Linh PD, Diwan VK,; Delay and discontinuity a survey of TB patients, search of a diagnosis in a diversified health care system. Int J Tuberc Lung dis 1999;3 (11) : 992-1000.* ***(5)*** *Nair DM, George A, Chacko KT.; Tuberculosis in bombay : new insights from poor urban patients. Health Pol Plann 1997 ; 12 (1) : 77-85.* ***(6)*** *Ngamvithayapong J, Winkvist A, Diwan V.; High AIDS awareness may cause tuberculosis patient delay : results from an HIV epidemic area, Thailand, AIDS 2000. Jul 7 ; 14 (10) : 1413-9.* ***(7)*** *CKojie CEE,Gender inequalities of health in the Third World, Sac Sci Med 1994 ; 39 (9) 1237-47.* ***(8)*** *Paolisso M, Leslie J.; Meeting the changing health needs of women in developing countries Soc Sci Med 1995, 40 (1) 55-65.* ***(9)*** *Wandwalo ER, Morkve O. ;Delay in tuberculosis cases findings and treatment in Mwanza, Tanzania, Int. J. Tubere Lung Dis 2000 Feb ; 4 (2) : 133-8.* ***(10)*** *WHO Global tuberculosis Report, Geneva 2000. pp. 1082-1088.*

❁❁

Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : **Sociology**
Research Link - 138, Vol - XIV (7), September - 2015, Page No. 72-73
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

दम्पत्तियों में व्यक्तित्व संबंधी विश्लेषण एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र, दम्पत्तियों में व्यक्तित्व संबंधी विश्लेषण एवं उनके समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। मानव समाज का जितना भी अध्ययन किया जाए, तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गहरे सागर से निकाला गया छोटा सा मोती जटिल मानव समाज, जिसमें यदि हम केवल शारीरिक रचना को ले तो स्त्री-पुरुष की शारीरिक बनावट में अंतर तो परिलक्षित होती है, उनके सोच-विचार और कार्य पद्धति में भी अंतर होता है। स्त्री-पुरुष दो अलग-अलग व्यक्तित्व होते हुए भी इन्हें यदि कोई तत्व एक कर सकता है तो ईश्वरीय प्रबंध से होने वाला विवाह है। अध्ययन में स्त्री-पुरुष जो आज पति-पत्नी के रुप में एक सूत्र में बंध गए हैं, का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 50 स्त्री एवं 50 पुरुषों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक विवाहित स्त्री एवं पुरुष से उनके विचार जानने हेतु अलग-अलग साक्षात्कार लिया गया है, जिससे अनुसंधान में तटस्थता बनी रहे।

डॉ.आशुतोष लाल

दम्पत्तियों का व्यक्तित्व संबंधी विश्लेषण :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही रहता है। और अपनी सभी तरह की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस दौरान उसे लोगों से संपर्क करना पड़ता है। यह संपर्क कार्य भी बहुत ही अहम रखता है। प्रत्येक व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ अलग–अलग होती हैं। इनमें ताल–मेल बैठाना बहुत ही कष्ट दायक कार्य है। प्रथम यह की स्वयं दम्पत्ति भी अलग–अलग सामाजिक, पारिवारिक वातावरण से आए होते हैं। दूसरा उसे अपनी पत्नी से और पत्नी को पति से तथा अन्य लोगों से सामंजस्य करना होता है। तीसरा जबकि वे पढ़े लिखे होते हैं। नौकरी करते हैं, तो दफ्तर में लोगों से संपर्क व सामंजस्य बनाना होता है। बाजार में, खेल में, खेल के साथियों के साथ, मनोरंजन स्थल, स्कूल में, बच्चों के साथ सभी लोगों के साथ सामंजस्य रखना होता है।

मनोवैज्ञानिक का कहना है कि मनुष्य दो प्रकार का होता है, एक 'इन्ट्रोवर्ट' एवं दूसरा 'एक्स्ट्रोवर्ट' एक अंर्तमुखी और दूसरा बर्हिमुखी। जो अंर्तमुखी होता है, वह समाज से दूर रहने की कोशिश करता है, लेकिन बर्हिमुखी व्यक्ति सभी तरह के लोगों से संपर्क बनाना चाहता है।

यद्यपि ये सभी बात मनुष्य के व्यक्तित्व पर निर्भर है। व्यक्तित्व किसी एक बात पर निर्भर नहीं है बल्कि इसमें बहुत सी परिस्थितियों का जिक्र मनोवैज्ञानिक एवं समाज शास्त्रीय करते हैं। जीववैज्ञानिक शारीरिक परिस्थितियों का जिक्र करते हैं। इसमें एक मत का अभाव है। योग्यया बुद्धि, बल, यह भी महत्वपूर्ण हो। व्यक्तित्व की परिधि में व्यक्ति की संपूर्ण प्रक्रियाएँ जैसे चलना, फिरना उठना–बैठना, हंसना, देखना, लिखना सभी तरह के कार्य व्यक्तित्व की श्रेणी में आतें हैं। इस पर परिस्थितियों का प्राकृतिक व सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण का एवं वहाँ की संस्कृतियों का प्रभाव स्पष्ट रुप से पड़ता है।

'व्यक्तित्व' शब्द को लैटिन शब्द च्मैत्व्छ। से संबंधित माना जाता है। लैटिन के च्मैत्व्छ। शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द PERSONA से हुई है, जिसका अर्थ है 'आकृति अथवा चेहरे के भाव'। इससे स्पष्ट होता है कि आरंभ में व्यक्तित्व का अर्थ प्रमुख रुप से व्यक्ति की शारीरिक संरचना से ही लगाया जाता था, लेकिन बाद में ज्ञान में वृद्धि होने के कारण सामाजिक व सांस्कृतिक गुणों का भी योगदान माना गया। वास्तव में "मनुष्य के पास व्यक्तित्व नहीं होता, वह स्वयं एक व्यक्तित्व है।"

किम्बाल यंग "व्यक्तित्व व्यक्ति की आदतों, मनोवृत्तियों शारीरिक लक्षणों और विचारों की वह संगठित व्यवस्था है, जो आत्म चेतना और "अहम" की धारणा तथा अन्य बहुत से प्रेरकों, स्थितियों तथा भूमिकाओं से संबंध विचारों व मूल्यों से निर्मित होती है।

इसका मतलब यह हुआ की व्यक्तित्व का संबंध शारीरिक विशेषता नहीं, बल्कि अनेक आन्तरिक विशेषताओं से है। किम्बाल यंग ने शरीर–रचना, समाज और संस्कृति की अन्तः क्रिया का परिणाम माना है। आपके अनुसार :

P = 0 S C

किम्बाल यंग का कहना है कि "समाज वह रंगमंच है, जिस पर व्यक्तित्व का विकास होता है।" इस अध्याय में मूल रुप से व्यक्ति के व्यक्तित्व संबंधी तथ्यों को मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण के साथ–साथ समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी जानने का प्रयास किया गया है।

यद्यपि व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके शरीर रचना पर आधारित है। जिसमें नाड़ी तंत्र और अंतः स्त्रावी ग्रंथियों का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त संस्कृति व पर्यावरण का भी प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है।

विभिन्न शारीरिक लक्षणों को लेकर मनुष्य जन्म लेता, पलता

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग), शासकीय मु.पा.महाविद्यालय, कटघोरा, जिला-कोरबा (छत्तीसगढ़)

और बढ़ता है। धीरे–धीरे उसके शरीर के विभिन्न अंग भी विकसित होते हैं, और एक समय विशेष में लिंगों का निर्धारण होता है और एक औसत उम्र में समाजिक नियमों के अन्तर्गत स्त्री–पुरुष का विवाह होता है। इस विवाहित जोड़ों को दम्पत्ति का नाम दिया गया है।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि एक "लड़की" पूर्णतः भिन्न परिस्थितियों में पलती–बढ़ती है। इसी तरह "लड़का" भी पूर्णतः भिन्न समाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक परिस्थिति में पलता–बढ़ता है। और दोनों भिन्न–भिन्न परिस्थिति में रहने वाले लड़के–लड़कियों का जब विवाह होता है, तो एक तीसरे तरह की परिस्थिति का निर्माण होता है। एक नयी जिदंगी, नयी परिस्थिति, नया वातावरण और नया परिवार। लेकिन यह परंपरा चली आ रही है, हजारों वर्षों से पीढ़ी दर पीढी। ऐसे में प्रत्येक पीढ़ी ने इसे स्वीकार किया है और एक महत्वपूर्ण शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति भी नियमों के अन्तर्गत होती है। इसलिए इसे भी लोग स्वीकार करते हैं। जहां तक जीवन साथी के चयन के प्रश्न आता है, तो कई तरह की परिस्थितियों का ध्यान आजकल समाज में एक फैशन बन गया है। इस चयन में रुप रंग, डील–डौल, शरीर के अंगों का सही होना, दहेज आदि का महत्व आज प्रचलन में है।

स्थिति जो भी हो यथार्थ बात ये है कि पति–पत्नी के संबंधों के बाद अन्य बहुत सी सामाजिक परिस्थितियाँ हैं, जैसे उत्तरदायित्व, ईमानदारी, सहनशीलता, सम्मान, सामंजस्य आदि। यही वास्तविकता है और व्यक्तित्व का माप दण्ड भी निर्धारित करता है।

दम्पत्तियों में रंगों का विवरण :

आज के फैशन के इस युग में प्रत्येक स्त्री–पुरूष अपने–अपने पति व पत्नियों की तुलना कुछ फिल्मी हस्तियों से करना चाहते है। क्योंकि युवा मन में फिल्मी दुनिया का छाप कुछ ज्यादा ही पड़ा है। प्रत्येक पुरूष चाहता है कि उसकी पत्नी सुन्दर हो गोरी–नारी हो, स्वस्थ, हट्टी–कट्टी व ऊँची–पुरी हो। यही स्थिति स्त्रियों की भी होती है उनके अनुसार उनका पति गोरा, स्वस्थ, हट्टा–कट्टा व ऊँचा–पुरा हो। परिस्थितियाँ चाहे जो भी हो, एक परम्परा है कि जोड़ी ईश्वर ने बनाई हैख् जिसके भाग में जो लिखा हो, वही होगा। लेकिन आज के इस युग में जहां स्त्री–पुरूषों में अपनी जीवन संगिनी के चयन की आजादी रहती है, काफी हद तक इस कहावत में परिवर्तन ला दिया है। आज स्त्री–पुरूष अपने–अपने जीवन साथी के चयन में पूर्व स्वतंत्र होते हैं। इसी परिस्थितियों में एक है प्रेम संबंध। यदि प्रेम हो जाए, तो फिर काले–गोर का कोई भेद नहीं रह जाता है।

उक्त तालिका 1.1 से स्पष्ट होता है कि दम्पत्तियों में कालों की संख्या पुरूषों में 10 प्रतिशत, स्त्रियों में 04 प्रतिशत, गोरों की संख्या पुरूषों में 22 प्रतिशत, स्त्रियों में 48 प्रतिशत, सांवलें लोगों में पुरूषों की संख्या 44 प्रतिशत है, वहीं स्त्रियों की 18 प्रतिशत। तथा गेहुंआ रंग न तो पूर्ण सांवला और ना ही पूर्णतः गोरा बीच की स्थिति वाले पुरूषों में 24 प्रतिशत व स्त्रियों की संख्या 30 प्रतिशत है।

तालिका 1.1 : दम्पत्तियों में रंगों का विवरण

क्र.	रंगो का विवरण	आवृत्ति पति	प्रतिशत	आवृत्ति पत्नी	प्रतिशत
1	काला	05	10	02	04
2	गोरा	11	22	24	48
3	संवला	22	44	09	18
4	गेहुंआ	12	24	15	30
	योग	**50**	**100**	**50**	**100**

दम्पत्तियों में वार्तालाप का मापदण्ड :

स्त्री–पुरूषों पर परिवार के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। कई परिवार ऐसे होते हैं, जहां अधिकांश लोगों का आना–जाना लगा रहता है, जिससे प्रारंभ से ही बच्चों में मिलन सारिता की स्थिति दिखाई देती है। कई परिवार में ऐसी स्थिति नहीं होती है। सच तो यह है कि कुछ लोग आवश्यकता से अधिक बातें करते हैं, कुछ कम बोलना पसंद करते हैं और कुछ साधारण बोल–चाल पसंद करते हैं।

अध्ययन में शोधकर्ता ने इस बात का विशेष उल्लेख करना आवश्यक समझा, क्योंकि यह भी व्यक्तित्व का एक अंग है।

तालिका क्रमांक 1.2 : वार्तालाप का मापदंड

क्रं.	मापदण्ड	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01	अधिक	02	04	06	12
02	कम	07	14	02	04
03	साधारण	37	74	33	66
04	अन्य	04	08	09	18
	योग	**50**	**100**	**50**	**100**

उक्त तालिका 1.2 से स्पष्ट होता है कि दम्पत्तियों में पुरूषों की संख्या अधिक बोलने वालों में 04 प्रतिशत। कम वालों की संख्या 14 प्रतिशत, साधारण बोलने वालों की संख्या 74 प्रतिशत है। अन्य से तात्पर्य है, परिस्थितियों के अनुसार कम या ज्यादा बोलना पंसद करते हैं। इसी तरह स्त्रियों में अधिक बोलने वालों की संख्या 12 प्रतिशत, कम 04 प्रतिशत, साधारण 66 प्रतिशत तथा परिस्थितियों के अनुसार स्त्रियों में 18 प्रतिशत लोग बोलते हैं।

संदर्भ :

(1) Young Kimbal : Hand book of social psychology routledge & keganpaul Ltd London, 1957, P-58.

(2) Ogburn WF & Nimkoff M.F. : A Hand book of Sociology, P-172.

(3) मनोरमा इयर बुक, 1992, म.प्र. परिशिष्ट, पृ. 581 606, 627, 650.

(4) समाजिकी : उ.प्र. समाज शा. परिषद वाराणासी, खण्ड 2, अंक 1 (1981).

(5) साक्षात्कार के माध्यम से आकड़ें प्राप्त करना।

❁❁

Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sociology
Research Link - 138, Vol - XIV (7), September - 2015, Page No. 74-76
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

भुंजिया जनजाति के परिवार एवं विवाह पर आधुनिकीकरण का प्रभाव (गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

प्रस्तुत शोधपत्र, गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में भुंजिया जनजाति के परिवार एवं विवाह पर आधुनिकीकरण के प्रभाव के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। शोध का अध्ययन क्षेत्र, छत्तीसगढ़ प्रदेश के जिला रायपुर के बिन्द्रानवागढ़ तहसील के क्रमशः गरियाबंद, छुरा एवं मैनपुर विकासखंड के 6 भुंजिया ग्राम हैं। अध्ययन हेतु चयनित छः ग्रामों के कुल 226 परिवारों के भुंजिया उत्तरदाताओं को अध्ययन हेतु चुना गया है। उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। साथ ही समूह वार्ता एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा भी अध्ययन विषय से संबंधित सूचनाओं का संकलन किया गया है।

डॉ.तुलसिंह सोनवानी

प्रस्तुत अध्ययन राज्य सरकार द्वारा चिन्हित विशेष पिछड़ी जनजाति भुंजिया से है, जिस पर शोध कार्य आरंभिक अवस्था में है। भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रियाओं का मुख्य परिणाम जनजाति जीवन शैली में होने वाला परिवर्तन है। वास्तविकता यह है कि किसी भी समुदाय की सामाजिक संरचना को समझने के लिए उस समुदाय की आन्तरिक संरचना को समझना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि समुदाय में आन्तरिक संरचना के अनुसार ही विभिन्न व्यक्तियों और समूहों की स्थिति का निर्धारण होता है। भारत में जनजाति समुदाय में बहुत प्राचीन काल से ही व्यक्तियों की परिस्थिति का निर्धारण वहां की आन्तरिक संरचना के आधार पर होता रहा है। भारत की अधिकांश जनजातियों का जीवन लम्बे समय तक अन्य समुदायों से बिल्कुल अलग–थलग रहा है। दुर्गम और एकान्त स्थानों पर निवास करने के कारण जनजातीय, समुदायों की अपनी एक पृथक संस्कृति थी। आज जनजातियों के जीवन में होने वाले परिवर्तन को दो तुल्य भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है।

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव से वर्तमान में जनजातीय समुदायों के जीवन में इतना परिवर्तन हो चुका है कि जनजातीय और कृषक समाजों के बीच कोई स्पष्ट भेद कर सकना बहुत कठिन है। इनकी जीवन–शैली, आजीविका उपार्जित करने के तरीके, रूढ़ि तथा धार्मिक विकास बहुत कुछ कृषक समुदायों के ही समान है।

प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए भुंजिया जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस दिशा में किए जा सकने वाले संभावित प्रयासों को भी ज्ञात किया गया है।

भुंजिया जनजाति का एक परिचय :

भुंजिया जनजाति छ.ग. की ऐसी जनजातियों में से एक है, जो काफी पिछडी हुई है जिनमें शिक्षा का स्फुरण अभी भी अंधकार को समेटे हुए है। भुंजिया जनजाति एक लघु अनुसूचित जनजाति है जो विशेष कर रायपुर जिले की बिन्द्रानवागढ तहसील में प्रमुख रूप से निवास करती है। यह जनजाति द्रविड भूमि की जनजाति है। जिसके तीन सामाजिक विभाग है, (1) चौखुठिया भुंजिया (2) चिन्डा भुंजिया एवं (3) खलारिया भुंजिया। इसमें से चौखुटिया भुंजिया बिन्द्रानवागढ तहसील के गरियाबंद व छुरा विकासखंड में निवासरत पाये जाते हैं, जबकि चिन्डा भुंजिया प्रायः मैनपुर विकासखंड में निवासरत है, खलारिया भुंजिया महासमुन्द तहसील के खल्लारी क्षेत्र (महासमुन्द) में निवास करते है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं :

(1) आधुनिकीकरण का भुंजिया जनजाति के परिवार एवं विवाह पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएँ निधारित की गयी हैं :

(1) आधुनिकीकरण कि प्रक्रिया का प्रभाव उन भुंजिया परिवारों में अधिक हो सकता है, जो शहर से करीब हैं।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन भुंजिया जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के अतिपिछड़ी जनजाति भुंजिया जो की मूलतः रायपुर जिले के गरियाबंद, मैनपुर तथा छुरा विकासखण्ड में निवास करती है, का अध्ययन किया गया है।

शासकीय महाविद्यालय, गरियाबंद, जिला-गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

उत्तरदाताओं का चुनाव :

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र, छत्तीसगढ़ प्रदेश के जिला रायपुर के बिन्द्रानवागढ़ तहसील के क्रमशः गरियाबंद, छुरा एवं मैनपुर विकासखंड के 6 भुंजिया ग्राम हैं। अध्ययन हेतु चयनित छः ग्रामों के कुल 226 परिवारों के भुजिया उत्तरदाताओं को अध्ययन हेतु लिया गया है।

तथ्यों का संकलन :

उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। साथ ही समूह वार्ता एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा भी अध्ययन विषय से संबंधित सूचनाओं का संकलन किया गया है।

अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष :

उत्तरदाताओं का सामान्य विवरण संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि 20–30 आयु तक के उत्तरदाता 5.3 प्रतिशत, 30–40 आयु तक के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 18.6, 40–50 आयु तक के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 29.9, 50–60 आयु तक के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 33.6 और जबकि 60 वर्ष से अधिक तक के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 13.3 है। अध्ययनगत उत्तरदाताओं में 90.3 प्रतिशत पुरूष तथा 09.7 प्रतिशत महिलाएँ हैं। उत्तरदाताओं की शिक्षा संबंधी अध्ययन से यह ज्ञाात हुआ है कि 36.3 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर है। इसी प्रकार 33.6 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक, 16.8 प्रतिशत माध्यमिक स्तर, 8.0 प्रतिशत हाई स्कूल स्तर तक और 5. 3 प्रतिशत उत्तरदाता हायर सेकन्डरी तक शिक्षा प्राप्त किए हैं। उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि 94.4 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है, 1.8 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित है, 3.5 प्रतिशत विधवा और 1.3 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर है। उत्तरदाताओं की व्यवसाय संबंधी अध्ययन से यह ज्ञाात हुआ है कि 10.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय कृषि है, 38 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि मजदूरी करतें हैं, इसी प्रकार 12.4 प्रतिशत वनोपज संग्रहण, 30.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि तथा कृषि मजदूरी और 9.3 प्रतिशत उत्तरदाता मजदूरी तथा वनोपज संग्रहण करते हैं। उत्तरदाताओं की मासिक आय संबंधी अध्ययन से यह ज्ञाात हुआ है कि 54.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 300 रूपये से कम तथा 23.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 300–500 तक, 14.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 500–700 तक, 3.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 700–900 तक तथा 900–1100 रूपये तक की मासिक आय वाले उत्तरदाता 2.2 प्रतिशत और 1100 से अधिक की आय में आने वाले उत्तरदताओं का प्रतिशत 1.0 है। उत्तरदाताओं का धर्म संबंधी जानकारी के संबंध में यह ज्ञात हुआ है कि 99.1 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू हैं, 0.9 प्रतिशत उत्तरदाता ईसाइ धर्म मानने वाले हैं।

परिवार का आकार संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि सर्वाधिक 54.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का आकार मध्यम (4–6 सदस्य) है, 18.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का आकार लघु (1–3 सदस्य) हैं, 22.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का आकार वृहद (7–9 सदस्य) है तथा 4.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवार अतिवृहद परिवार (10–12 सदस्य) की श्रेणी में आता है।

भुंजिया जनजाति के परिवार एवं विवाह पर आधुनिकीकरण का प्रभाव संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि आधुनिकीकरण के प्रभाव से भुंजिया परिवार एवं विवाह की मान्यताओं से अछूता नहीं रहा है। वर्तमान संदर्भ में सर्वाधिक 53.1 प्रतिशत (120) उत्तरदाताओं के अनुसार परिवार का वृद्ध सदस्य ही मुखिया होता है, जबकि 20 वर्ष पूर्व 86.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार यह स्थिति थी, 46. 9 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि वर्तमान में पिता ही परिवार का मुखिया होता है, जबकि 20 वर्ष यह स्थिति 13.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार थी। परिवार में महिला का मुखिया होने के विषय में 20 वर्ष पूर्व जहां 1.0 प्रतिशत उत्तरदाता ही यह मानते हैं कि महिला भी परिवार की मुखिया होती थी। अधिकांश उत्तरदाता यह मानते है कि 20 वर्ष पूर्व भी और वर्तमान में पुरूष ही मुखिया की भूमिका निभाता है। विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि 20 वर्ष तथा वर्तमान में मुखिया के बातों/आदेशों को स्वीकारना व पालन किया जाता है। इस विषय पर लगभग अधिकांश उत्तरदाता सहमत हैं। 20 वर्ष पूर्व 1.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार तथा वर्तमान में 11.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मुखिया के बातों को स्वीकारा नहीं जाता। यह अतंर इस बात का प्रमाण है कि आधुनिकीकरण ने जनजातीय समुदाय को आंशिक रूप से प्रभावित किया है। संपत्ति का स्वामित्व संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि अधिकांश 98. 7 प्रतिशत उत्तदाताओं के अनुसार 20 वर्ष पूर्व परिवार की संपत्ति का स्वामी मुखिया ही होता था तथा 87.1 प्रतिशत के अनुसार यही स्थिति आज भी है। जबकि 1.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार 20 वर्ष पूर्व परिवार के लिए संसाधन जुटाने वाला संपत्ति का स्वामी होता था जबकि वर्तमान में यह स्थिति 12.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार है। संपत्ति पर पुत्र/पुत्री के अधिकार संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि जहां 20 वर्ष पूर्व केवल 1.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार संपत्ति पर पुत्र/ पुत्री को समान अधिकार होता था, पर वर्तमान में 82.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार यह स्थिति है। स्पष्ट है कि जहां पूर्व में जनजातीय समुदाय में पुत्र–पुत्री का संपत्ति पर समान अधिकार नहीं होता था, जबकि वर्तमान में स्थिति इसके विपरीत है। मुखिया की मृत्यु पश्चात परिवार का उत्तराधिकारी के संबंध में अधिकांश उत्तरदाता यह मानते हैं कि 20 वर्ष पूर्व भी और वर्तमान में भी मुखिया की मृत्यु के पश्चात मुखिया का बड़ा पुत्र ही परिवार का उत्तराधिकारी होता है। 10.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह बतलाया है कि पिता की मृत्यु के पश्चात ज्येष्ठ पुत्र ही नहीं वरन कोई भी पुत्र उत्तराधिकारी बन सकता है, पर सामान्यतः ऐसा विशेष परिस्थितियों में ही होता है, जैसे कि ज्येष्ठ पुत्र शारीरिक/मानसिक रूप से निशक्त, गैर जिम्मेदार या अन्य किसी किसी समस्या से पीड़ित हो। संपत्ति के बंटवारे के विषय में जहां 20 वर्ष पूर्व 86.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार तथा वर्तमान में 73.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार परिवार का मुखिया ही संपत्ति का बंटवारा करता है। भुंजिया जनजाति में जहां 20 वर्ष पूर्व पुत्र के आभाव में गोद लेने की प्रथा नहीं के बराबर थी, वहीं वर्तमान समय में (10.2 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि पुत्र के आभाव में गोद लिया जाता है। वस्तुतः भुंजिया परिवार में वंश परंपरा की दृष्टि से ही विरले दत्तक पुत्र की परंपरा देखी जा सकती है।

संपत्ति के विभाजन के पंजीकरण के विषय में एक पीढ़ी पूर्व में भुंजिया जनजाति में संपत्ति के बंटवारा का पंजीयन नहीं कराया जाता है, लेकिन वर्तमान में अधिकांश उत्तदाताओं के अनुसार सम्पत्ति का पंजीकरण कराते हैं। उत्तरदाताओं के अनुसार जहां एक पीढ़ी पूर्व ज्यादातर विवाह 12 वर्ष से ही पहले कर दिए जाते थे, वहीं वर्तमान में जनजातियों में विवाह 16 वर्ष या उससे अधिक आयु में होता है। जनजातियों में विवाह में हो रहे परिवर्तन को आधुनिकीकरण के संदर्भ में जोड़कर देखा जा सकता है। विवाह हेतु वर–वधु के चुनाव में भूमिका संबंधी विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ हैं कि एक पीढ़ी पूर्व और वर्तमान में ज्यादातर उत्तरदाताओं का मानना है कि वर–वधु के चुनाव में परिवार के मुखिया के सांथ–सांथ रिश्तेदारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनजाति में विवाह सम्पन्न कराने में भूमिका के विषय में अधिकांश उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते हैं कि 20 वर्ष पूर्व भी तथा वर्तमान में भी भुंजिया जनजाती में विवाह में नेगी जवान की ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विवाह के सम्पन्न होने की अवधि संबंधी विवरण से यह ज्ञात हुआ है कि यहां पूर्व में भुंजिया जनजाति में विवाह 07 दिवसों में सम्पन्न होता था, वहीं वर्तमान समय में इसकी अवधि कुछ स्थान में 3–4 दिन तो कहीं 5–7 दिन है।

संदर्भ :

(1) *Ander's Narman (1996); Tribes or Nation; Some Lessio from the keny an Multiparty Elections, Gothenburg, John Willey and Sons; 1996.*

(2) *Bhatt. G.S. (1978); From Caste-Structure of Tribe: The Case of Jounsar Bawar. The Eastem Anthropologist, Vol. 31, No. 3, June. Sep. 1978.*

(3) *Chattopadhyay, K.P.; "Tribal Education", Man in India, Vol. 33, No. 1, 1953.*

(4) *Dashi, J.K.; Social Structure and Social Change in a Bhil Village, New Delhi, New Hights, 1974.*

(5) *Elwin Verrier ; The Religion of An Indian Tribes (Saors), Landon, Oxford University Press, 1960, The Tribal World of Verrier Elwin, Bombay, Oxford University Press, 1955.*

(6) *Enthoven, R.E.R.E.; Tribes and Castes of Bombay (3 Vols), Bombay, Government Central Press, 1920.*

(7) *Gluckman, Max; Politics, Law and Ritual in Tribal Societies, London, Basil Block Well, 1971.*

(8) *Hiralal, R.B. & Russel, R.V.; The Tribes and Castes of the Central Provinces of India, Vol. III, London, Macmillan, 1953.*

(9) *Hussain, Nadeem; Indian Society and Culture Coutinuity and Change, Lucknow, Bharat Book Centre, 2004.*

(10) *Hobel.E.A;The law of Primitive Man , HawardUniversity Press, Haward 1954.*

(11) *Khare, P.K.; Social Change of Indian Tribes, New Delhi, Deep & Deep Publications, 1991.*

(12) *Madan,G.R.;"Indian Rural Problems, New Delhi", Radha Publications, 2002.*

(13) *Majumdar,D.N;An Introduction to social Anthropology, Asia Pub.House Bombay, 1967.*

(14) *Naik, T.B.;The Bhils ; Bharti Adim Jati Sangh, 1956.*

(15) *Nirgune,Basant;Adivarta:Chhattisgarh ki Janjatiya, 2004.*

(16) *Report of tribal Development, 2005-06.*

❁❁

Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sociology
Research Link - 138, Vol - XIV (7), September - 2015, Page No. 77-78
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2014 - 1.8007

आँगनबाड़ी केन्द्र का महिलाओं तथा बच्चों के स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन (बस्तर जिले के बडेराजपुर विकासखंड के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र आंगनबाड़ी केन्द्र का महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के समाजशास्त्रीय अध्ययन से सम्बंधित है। अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले के बड़े राजपुर विकासखण्ड में लागू आंगनबाड़ी कार्यक्रम पर आधारित है। अध्ययन हेतु 229 जनजाति परिवारों का चुनाव किया गया है। तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के द्वारा किया गया है। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात हुआ कि आंगनबाड़ी केन्द्र पिछड़े जनजाति क्षेत्रों में महिला स्वास्थ्य की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

स्नेहलता गौतम* एवं डॉ.एल.एस.गजपाल**

प्रस्तावना :

महिला विकास की शुरूआत न केवल भारत में, वरन् वैश्विक स्तर पर 70 के दशक में हुई। जब पहली बार वैश्विक स्तर पर उनकी सामाजिक–आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति पर गहनता पूर्वक विचार किया गया। विचार में यह बात उभर कर सामने आई कि, महिलाएँ शिक्षा, रोजगार स्वाथ्य जैसे मूलभूत सुविधाओं से जानबूझकर वंचित किए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनका विकास नितांत आवश्यक प्रतीत होता है। भारत में 1975 में टूवर्डस इक्वेलेटी रिपोर्ट में यही बात कही गयी है, परिणामतः 70 से 80 के दशक में लागू किए गये पंचवर्षीय योजनाओं मे महिला विकास कार्यक्रम को प्रबलता से लागू करने हेतु प्रयास किए गए।

महिलाओं से संबंधित टूवर्डस इक्वेलिटी रिपोर्ट के आने के बाद ही भारत में पहली बार 6वीं पंचवर्षीय योजना 1980 से 85 के अंतर्गत महिलाओं के लिए रोजगार, आर्थिक आत्मनिर्भरता, शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार नियोजन से जुड़े हुए बातों को योजनाबद्ध तरीके से लागू करने की दिशा में प्रयास किया गया। 7 वीं पंचवर्षीय योजना 1985 से 90 में पूर्व के विकास कार्यक्रमों को लागू रखते हुए महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मे परिवर्तन को राष्ट्रीय विकास से जोंड़कर देखनें का प्रयास किया गया। इसी योजना के अंतर्गत महिला एवं बालविकास की स्थापना की गयी, जो कि मानव संसाधन विकास का एक हिस्सा था और उसके बाद से यह विभाग निरतर महिला एवं बच्चों के विकास की दिशा में अपनी भूमिका निभाते आ रहा है। इसी विभाग के अंतर्गत एकीकृत बालविकास कार्यक्रम आई.सी.डी.एस. भी प्रारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को पूरक पोषण आहार प्रदान करने के साथ–साथ उनके स्वास्थ्य की देखभाल करने उन्हें पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना रहा है। 1990 में स्थानीय स्तर पर आधारित एक प्रभावशाली योजना महिला विकास के लिए तैयार की गयी। जिसे भारत शासन के द्वारा तैयार किया गया था (रिजवी और मिलर 1995)।

आंगनबाड़ी कार्यक्रम पहले केवल एकीकृत बाल विकास कार्यक्रम से जुड़ा था, जिसे कालान्तर में महिला व किशोरी बालिका से भी जोड़ दिया गया। स्पष्ट है कि यह कार्यक्रम महिलाओं तथा बच्चों के विकास से जुड़ा हुआ है। अध्ययन के द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में हमें आंगनबाड़ी केन्द्रों की महिला विकास में भूमिका का ज्ञान होगा, जो भविष्य में किए जाने वाले शोध अध्ययनों के लिए आधार हो सकता है।

अध्ययन के उददेश्य :

(1) उत्तरदाताओं की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना। (2) आंगनबाड़ी केन्द्र के द्वारा चलाई जा रही गतविधियों का महिलाओं के स्वाथ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना। (3) आंगनबाड़ी केन्द्र की गतिविधियों का बच्चों के विकास पर होने वाले प्रभावों को ज्ञात करना।

परिकल्पना :

(1) आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की उदासीनता एवं ज्ञान का अभाव इसकी प्रभाविता को कम करता है।

(अ) उत्तरदाताओं का चुनाव :

प्रस्तुत अध्ययन बडेराजपुर विकास खण्ड के ग्राम पंचायत बांसकोट के विशेष संदर्भ में) किया गया है, जिसमें अध्ययन हेतु ग्राम पंचायत बांसकोट के आठ आंगनबाड़ी केन्द्रों एवं उसके अन्तर्गत 229 परिवारों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है, जो कि अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करता हो।

(ब) तथ्यों का संकलन :

प्रस्तुत अध्ययन तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के माध्यम से किया गया है।

निष्कर्ष :

उत्तरदाताओं के सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि 20–30 आयु के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 47.02 प्रतिशत है। 30–40 के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 35.04 प्रतिशत है। इसी प्रकार 40–50 आयु के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 17.04 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि 20–30 आयु की महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक 47.02 प्रतिशत है। अध्ययन से ज्ञात होता है

**शोधार्थी, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*
***सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*

कि अनुसूचित जनजाति की उत्तरदाताओं का प्रतिशत 68.01 प्रतिशत है। अन्य पिछडा वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 27.05 प्रतिशत है। तथा अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 202–202 है। अध्ययन से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति की महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 68.01 सर्वाधिक हैं। उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्थिति की जानकारी से ज्ञात हुआ है कि साक्षर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 35.04प्रतिशत है। प्राथमिक शिक्षा के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 30.01 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा 15.03 प्रतिशत निरक्षर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 14.08 प्रतिशत है। इसी प्रकार हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत 4. 04 प्रतिशत है। वैवाहिक स्थिति के विश्लेषण से विदित हुआ है कि विवाहित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 94.07 प्रतिशत है। विधवा उत्तरदाताओं का प्रतिशत 4.04 प्रतिशत तथा तलाकशुदा उत्तरदाताओं का प्रतिशत 0.09 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं के व्यावसाय संबंधी जानकारी से विदित हुआ है कि कृषि व्यवसाय से जुडे उत्तरदाताओं का प्रतिशत 72.5 प्रतिशत है। मजदूरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 27.5 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं के मासिक आय के संबंध में विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि 500–1000रू. मासिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 85.01 प्रतिशत है। 1000–2000 मासिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 12.07 प्रतिशत 3000 से अधिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 2. 02 प्रतिशत है। परिवार का आकार के संबंध में जानकारी से ज्ञात हुआ है कि उत्तरदाताओं में लघु आकार के परिवार का प्रतिशत 50.02 प्रतिशत मध्यम आकार के परिवार का प्रतिशत 47.06 प्रतिशत एवं वृहत आकार के परिवार का प्रतिशत 2.02 प्रतिशत है। एकाकी परिवार का प्रतिशत 95.02 प्रतिशत है। इसी प्रकार संयुक्त परिवार का प्रतिशत 4.08 प्रतिशत है।

आंगनबाड़ी केन्द्र की गतिविधियों का महिलाओं के विकास पर प्रभाव :

आंगनबाड़ी केन्द्र में पोषण आहार दिया जाता है कि नहीं, इस विषय में उत्तरदाताओं से जानकारी ली गई। शत प्रतिशत अध्ययनगत उततरदाताओं ने पोषण आहार दिया जाता है, कहा है। पोषण आहार का वितरण नियमित होता है, शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है। आंगनबाड़ी केन्द्र में स्वास्थ्य की जाँच के विषय में जानकारी ली गई, शत प्रतिशत अध्ययनगत उत्तरदाताओं ने होता है, कहा है। आंगनबाड़ी केन्द्र में टीकाकरण होता है, शत प्रतिशत उततरदाताओं ने हाँ कहा है। गर्भावस्था में आयरन व फॉलिक एसिड की गोलियों के दिए जाने के विषय में अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं से जानकारी ली गई, शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि आयरन व फॉलिक एसिड की गोलियाँ दी जाती हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि आंगनबाड़ी केन्द्र में नियमित वजन 90.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने लिया जाता है कहा है। 9.6 प्रतिशत ने नहीं लिया जाता कहा है। केन्द्र में नियमित वजन लिया जाता है। जिसका प्रतिशत सर्वाधिक 90.4 प्रतिशत है। अध्ययनगत उत्तरदाताओं से स्वास्थ्य शिक्षा के विषय में जानकारी ली गई शत प्रतिशत अध्ययनगत उत्तरदाताओं ने स्वास्थ्य शिक्षा दी जाती है, बताया है। गभार्वस्था में धात्री काल में आहार की जानकारी दी जाती है, शत प्रतिशत अध्ययनगत उत्तरदाताओं ने कहा है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि केन्द्र में धात्री माता आती है 92.6 उत्तरदाताओं ने कहा है। 9.4 उत्तरदाताओं ने नहीं आती कहा है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धात्री माता केन्द्र में आती है इसका प्रतिशत सर्वाधिक 92.6 प्रतिशत है।

धात्री व गर्भवती माता केन्द्र में पोषण आहार दिए जाने के विषय में ज्ञात हुआ है कि 90.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा धात्री व गर्भवती माता केन्द्र में पोषण आहार के विषय में चर्चा करती है। 9.6 प्रतिशत उत्तरताओ ने कहा कि केन्द्र में पोषण आहार के विषय में चर्चा नहीं करती कहा है। ज्ञात हुआ है कि धात्री व गर्भवती माता केन्द्र में पोषण आहार के विषय में चर्चा करती है, जिसका प्रतिशत अधिक 90.4 प्रतिशत है। धात्री व गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य जाँच का लाभ लेने के विषय में ज्ञात हुआ है कि शत प्रतिशत धात्री गर्भवती माताएं स्वास्थ्य जॉच का लाभ लेती हैं। गर्भवती धात्री माताएँ टीकाकरण करवाती है, इस विषय पर शत प्रतिशत अध्ययनगत उत्तरदाताओं ने बताया है कि गर्भवती व धात्री माताएं टीकाकरण करवाती है। 90.4 प्रतिशत उत्तरदाताताओं ने कहा कि गर्भवती माताएँ आयरन व फॉलिक एसिड की गोलियाँ लेती हैं, 9.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं लेती कहा है।

आंगनबाड़ी केन्द्र की गतिविधियों का बच्चों के विकास पर प्रभाव :

बच्चों के विकास पर स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों का प्रभाव अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं में बच्चों के नियमित टीकाकरण के विषय में शत प्रतिशत ने कहा है कि बच्चों का नियमित टीकाकरण करवाते हैं। बच्चों की स्वास्थ्य जॉच से ज्ञात हुआ है कि 97.8 प्रतिशत उत्तरदताओं ने कहा है कि बच्चों का स्वास्थ्य जाँच करवाते हैं। 2.2 उत्तरदाताओं ने कहा है कि बच्चों की स्वास्थ्य जाँच नहीं करवाते हैं। ज्ञात हुआ है कि बच्चों का स्वास्थ्य जॉच करवाते हैं, जिसका प्रतिशत सर्वाधिक 97.8 प्रतिशत है। ज्ञात हुआ है कि 92.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि बच्चों का नियमित वजन करवाते हैं। 7.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि वे वच्चों का नियमित वजन नहीं करवाते हैं। ज्ञात हुआ है कि बच्चों का नियमित वजन करवाते हैं, जिसका प्रतिशत सर्वाधिक 92.6 प्रतिशत है।

शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि कुपोषित बच्चों को अतिरिक्त खुराक दी जाती है, उसका लाभ होता है। अध्ययनगत समूह के उत्तरदाताओं ने बच्चों को जो पोषण आहार दिया जाता है, इस विषय पर शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि बच्चों को पोषण आहार दिया जाता है, उसे खिलाते हैं।

संदर्भ :

(1) *Agarwal, A. K. and Rajesh (2005).Long term effects of ICDS services on behaviour and academic achievements of children. Chandigarh : Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Dept. of Community.* ***(2)*** *Balsekar, A. et al. (2005).Child welfare and community participation : ICDS programme in Trivandrum district, Kerala. Institute of Social Sciences, Thiruvananthapuram.* ***(3)*** *Balsekar, A. et al.(2005)Child welfare and community participation:ICDS programme in Trivandrum district, Kerala. Institute of Social Sciences, Thiruvananthapuram.* ***(4)*** *Banerjee, S. (1999).A Study on community participation in ICDS at North Calcutta. Vidyasagar School of Social Work, Kolkata.* ***(5)*** *Basu, Night (1987); "Right of Married Women and Attitudes Towards them : An Evaluation of Awareness and Attitudes", Indian Journal of Adult Education, 48(2), April-June.* ***(6)*** *Bhagwati, J. (1973); "Education Class Structure and Income Equality", World Development (No. 5).*